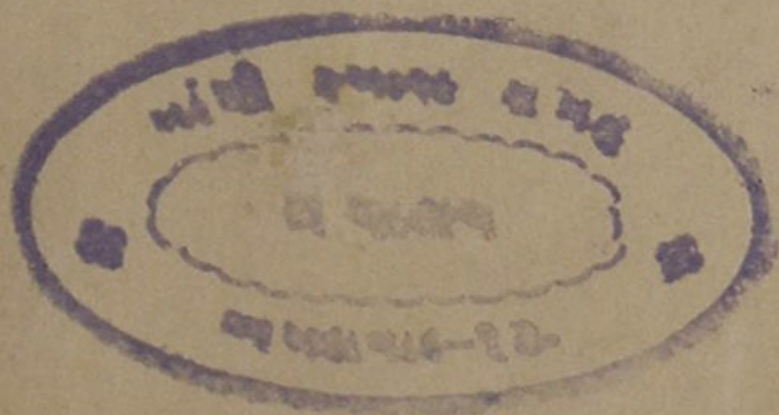


# नित्य भजन

गांधी



0 OCT 1969

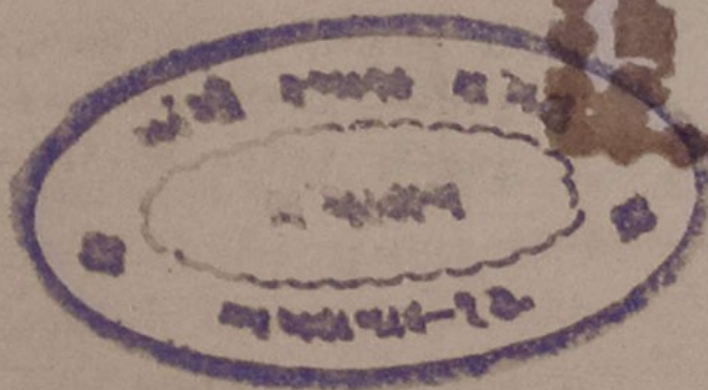


नवभवन प्रकाशन मंदिर

अमदावाद-१४

नित्य भजन

१२३-२  
UTAN  
७४७५  
गांधीजी



नवजुवन प्रकाशन मंदिर  
अभिलाषा-१४

મુદ્રક અને પ્રકાશક  
શાંતિલાલ હરજીવન શાહ  
નવજીવન મુદ્રણાલય, અમદાવાદ-૧૪

© નવજીવન ટ્રસ્ટ, ૧૯૫૨

પહેલી આવૃત્તિ, ૧૯૫૨, પ્રત ૬,૦૦૦

પુનર્મુદ્રણ, ૧૯૬૫, પ્રત ૧,૦૦૦

પુનર્મુદ્રણ ૧૯૬૯, પ્રત ૨,૦૦૦

## પ્રકાશકનું નિવેદન

રોજ રોજ મનન કરવા જેવા આ સુવિચારો ગાંધીજી, રોજ એક એક કરીને, તા. ૨૦-૧૧-'૪૪થી શરૂ કરી, લગભગ બે વરસ સુધી નિયમથી લખતા હતા. આમ લખવાની શરૂઆત તેમણે શ્રી હિંગોરાણી કરીને એક ભાઈ ઘરભંગના દુઃખથી ઘવાયા હતા તેમના મનની શાંતિ નિમિત્તે કરી હતી.

શરૂમાં તા. ૧૩-૧૦-'૪૪થી થોડા દિવસ સુધી આ રીતે તેમણે એક એક સુવિચાર લખ્યો; પછી ૨૦-૧૧-'૪૪થી તે રોજ લખવાનો નિયમ લીધો; અને પોતે નોઆખાલી ગયા ત્યારે અનેક નાનાં મોટાં કામો છોડી ત્યાંના જ એકમાત્ર કામમાં લીન થયા, તેથી આ નિયમ પણ છૂટ્યો હતો.

આ વિચારોમાંથી (તા. ૨૦-૧૧-'૪૪થી ૧૯-૪-'૪૫ સુધીનો) પહેલો હપતો શ્રી હિંગો-રાણીએ મૂળ હિંદીમાં છપાવ્યો છે. મૂળ હિંદી

સાથે તેનો ગુજરાતી અનુવાદ અહીં પ્રસિદ્ધ કર્યો છે, જેથી તેની સસ્તી નકલ સૌને મળી શકે.

આ વિચારોમાં ત્રણ જગ્યાએ ગાંધીજીએ અમુક હિંદી લખનોનો ઉલ્લેખ કર્યો છે, તે લખનો પરિશિષ્ટમાં ઉતાર્યાં છે. ઉપરાંત, તા. ૨૦-૧૧-'૪૪થી નિયમ લેતા પહેલાં, તા. ૧૩-૧૦-'૪૪થી ૧૬-૧૧-'૪૪ સુધીમાં છૂટક તારીખોએ વિચારો લખવાના શરૂ કરેલા, તે પણ શરૂનાં પાનાંના ક્રમાંકમાં આપવામાં આવ્યા છે.

૧૫-૨-'૫૨

नित्य भजन



जो सिर्फ ईश्वरका सहारा लेते हैं, वे मनुष्यका सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों, चाहे जिन्दा । यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे ।

१३-१०-'४४

जे लोकें ईश्वर पर जे आधार राखे छे ते मरेलां के अवतां मानवी पर कही आधार नहोँ राखे. आ विचार तुं हिलमां परापर उतारसे तो कही शोक नहोँ करे.

१३-१०-'४४



તુમ ' ટ્રાઇ અગેન ' ( ' ફિરસે કોશિશ કરો ' )  
 વાળી કવિતા જાનતે હો ? દુઃખસે લાચાર  
 બનનેકી તુમકો ઇજાજત નહીં હૈ । દૂસરા સબ  
 ભરોસા નિકમ્મા હૈ, એક ઈશ્વર પર હી વિશ્વાસ  
 રખો । વિદ્યાકી મૌતસે યહી શિક્ષા મિલતી હૈ ।  
 તુમ્હારે પ્રેમકી પરીક્ષા હો રહી હૈ ।

૧૪-૧૦-'૪૪

' ટ્રાય અગેન ' ( ' ફરી ફરી કેશિશ કરો ' )-  
 વાળી અંગ્રેજી કવિતા તું જાણે છે ? દુઃખથી  
 લાચાર બનવાની તને છૂટ નથી. ખીજો બધો  
 ભરોસો ખોટો છે. કેવળ ઈશ્વર પર ભરોસો  
 રાખ. વિદ્યાના મૃત્યુનો પાઠ પણ એ જ છે.  
 તારો પ્રેમ કસોટીએ ચડ્યો છે.

૧૪-૧૦-'૪૪

ईश्वरकी कृपा ईश्वरका काम करनेसे आती है । तुमको ईश्वरका काम करना है । कभी चरखा चलाता है ? चरखा चलाना सबसे बड़ा यज्ञ है । रोते रोते भी चरखा चलाओ ।

१५-१०-'४४

ईश्वरनुं काम अन्वये तो तेनी कृपा भजे. तेथी तारे ईश्वरनुं काम करवुं. केई वार रेंटिये। यलावे छे ? रेंटिये। यलाववे। ये सौथी भोटे। यज्ञ छे. शेतो शेतो पण तुं रेंटिये। यलाव.

१५-१०-'४४

शांतिमें, सुखमें तो सब कुछ होता है । चरखा दुःखीका, भूखोंका, सहारा है । दुःखमें तो छूटना ही नहीं चाहिये ।

१६-१०-'४४

शांतिमां ने सुभमां तो अधुं थाय. रेंटिये। दुःखियां ने भूख्यांनो आधार छे. अटले दुःखमां तो अने छोडवानो डाय न नहुं।

१६-१०-'४४

तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण भी फुरसत न मिले । यही मृत प्रियजनोंके प्रति सच्चा प्रेम है । अंग्रेजोंको देखो । वे भी अपने प्रियजनोंको प्यार करते हैं । लेकिन जब वे प्रियजनोंसे जुदा होते हैं, तो और भी अधिक अपनेको सेवा-कार्यमें समर्पण कर देते हैं ।

१७-१०-'४४

એક ક્ષણ પણ નવરાશની ન રહે એ રીતે તારી દિનચર્યા ગોઠવ. એ જ અહીંથી વિદાય થયેલાં પ્રિયજનોને માટેનો સાચો પ્રેમ છે. અંગ્રેજોને જો. તે બધા પણ પોતાનાં પ્રિયજનોને ચાહે છે. પરંતુ પોતાનાં પ્રિયજનોને ગુમાવ્યા પછી તેઓ પોતાની જાતને સેવામાં વધારે અર્પણ કરી દે છે.

૧૭-૧૦-'૪૪

मुए जिन्दोंको कुछ भेजते हैं, उसका हमें पता नहीं चलता है; लेकिन जिन्दे मुओंको भेजते हैं, यह निःसन्देह है । इसलिए हम उनके पीछे कभी न रोयें ।

ईश्वर-कृपा (Grace) ईश्वरका काम करनेसे आती है । ईश्वरके काम शरीरसे, मनसे, वाणीसे, दुःखीकी सेवा करनेसे होते हैं ।

१८-१०-'४४

भरेलां ज्वतांने कंधकि भोडले छे के नड्डीं अे आपण्णे ज्वाणी शकतां नथी. परंतु ज्वतां भरेलांने भोडले छे अे विषे जराये शंका नथी. तेमनी पाछण आपण्णे कही रोककण न करीअे.

धश्वरनी कृपा तेनां काम करवाथी भणे छे अने शरीर वडे, मन वडे तेम ज वाणी वडे दुःखियांनी सेवा करवाथी धश्वरनां काम थाय छे.

१८-१०-'४४

ऐसा सोचो कि गरीब आदमी तुम्हारी हालतमें क्या कर सकता है । उसकी पत्नी मर जाय तो वह दुगुना काम करेगा । वह भी ईश्वरका भक्त है । भीतरका आनन्द ईश्वरका काम करनेसे ही पैदा होता है । हम सब अपनेको गरीबकी हालतमें रख दें । बहरेपनको ईश्वरकी बख्शिश समझो । एक क्षण भी बगैर कामके रहना ईश्वरकी चोरी समझो । मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनन्दका नहीं जानता हूँ ।

सबसे अच्छा तरीका तुम्हारे लिए २० ता० मनानेका तो यह है कि तुम सारा दिन सूत कातते रहो, या अपनी रुचिके अनुसार आश्रमके कोई भी काममें लगे रहो, और उसके साथ रामनामको जोड़ दो ।

( गरीबोंको खिलाना ) बिलकुल गैरजरूरी है । जिन्हें सचमुच जरूरत हो, उन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो ।

१९-१०-'४४

ગરીબ માણસ તારા જેવી દશામાં શું કરે તેનો વિચાર કર. તેની પત્ની મરી જાય તો તે ખમણું કામ કરવા માંડશે. તે પણ ઈશ્વરનો જ ભક્ત છે. ઈશ્વરનું કામ કરવાથી જ અંતરનો આનંદ પેદા થાય છે. તેથી, આપણે આપણી જાતને ગરીબની દશામાં મૂકી દઈએ. તારા બહેરાપણાને ઈશ્વરની બક્ષિસ માન. એક ક્ષણ પણ ઈશ્વરનું કામ કર્યા વગર રહેવું એ તેની ચોરી છે એમ સમજ. અંદરનો કે બહારનો આનંદ મેળવવાનો ખીલો કેઈ રસ્તો હું જાણતો નથી.

આખો દિવસ કાંતવામાં અથવા તને ગમતા આશ્રમના કેઈ પણ મજૂરીના કામમાં ગાળવો અને સાથે રામનામનું રટણ કરવું એ તારે માટે એ દિવસ (૨૦મી) પાળવાનો સૌથી સારો રસ્તો છે.

(ગરીબોને ખવડાવવું) તદ્દન બિનજરૂરી છે. જેને ખરેખરી જરૂર હોય તેવાને જોઈએ તો ભલે કંઈક આપ.

૧૯-૧૦-'૪૪

आजका दिन तुम्हारे लिए शुभ दिन है । विद्याको मैंने काफ़ी रुलाया था । वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी : ' भगवान बताओ । ' मैंने उसे डाँटा और कहा : ' भगवानको चरखेमें देखेगी । ' आखिर समझ गई ।

हम यंत्र हैं और यांत्रि भी । शरीर यंत्र है, आत्मा यांत्रि । आज तुम्हें इस यंत्रसे यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिसाब देना है ।

२०-१०-'४४

आजने। द्विवस तारे माटे अेक शुभ पर्व छे. विद्याने में भूष रडावेदी. ते तारी माइक न रोया करती अने कहेती के मने लगवान अतावे। में तेने धमकावीने कहेकुं के लगवान तने रेंटियामां जेवाने। मणशे. आअरे ते समञ्ज. आपणे यंत्र छीअे अने यंत्रि पणु छीअे. आ शरीर यंत्र छे अने आत्मा तेने। यंत्रि छे. आजे तारे तने मणेला यंत्र पासेथी यंत्रना जेवुं काम लेवानुं छे अने मने तेने। हिसाब आपवाने। छे.

२०-१०-'४४

मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मारफत ईश्वरको निश्चित देखता है । चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है, और उसका दृश्यफल भी है । मनुष्यको मनुष्यका सहारा चाहिये, इसलिए तो आश्रम वगैरा संस्थायें रहती हैं । मनुष्यका सहारा सान्निध्यसे ही होता है, ऐसा नहीं है । कोई डाक द्वारा करते हैं, कोई सिर्फ विचारसे, कोई मरे हुएके सद्वचनोंसे, जैसे हम तुलसीदाससे रोज मिलते हैं ।

२१-१०-'४४

माणस जेनुं ध्यान धरे छे तेनी मारइते अत्रूक ईश्वरने जुये छे. रेंटिये। सौथी सारुं प्रतीक छे अने तेनुं नजर पडे अेवुं इण मणे छे. माणसने माणसने। आधार जेध अे छे, ते माटे तो आश्रम वगेरे संस्थाये। डाय छे. (परंतु) माणसने। आधार ते पासे डेवाथी न मणे छे अेवुं नथी. डेधकि पत्रवडेवार द्वारा, डेधकि मात्र विचार द्वारा अने डेधकि आपणे जेम रेण तुलसीदासने मणीये छीये तेम मृत्यु पाभेदानां सद्वचने। द्वारा तेनी सोअत भेणवे छे.

२१-१०-'४४



आशा अमर है । उसकी आराधना कभी  
निष्फल नहीं होती ।

२२-१०-'४४

आशा अमर छे. तेनी आराधना कही निष्फल  
नथी जती.

२२-१०-'४४

मेरे पास बैठनेमें कोई हानि नहीं है, लेकिन  
ऐसे वक़्त पर, जैसे महादेव करता था और  
कृपालानी, तकली चलाना । पीछे ईश्वरके  
समयकी चोरी नहीं होगी । तकली हमारा मूक  
मित्र है । कुछ आवाज़ ही नहीं करती, और  
जगतके लिए जो धागा चाहिये उसे निकालती  
रहती है । तकली चलाते समय हम सब कुछ  
देख सकते हैं और सुन सकते हैं । मैं तो यहाँ  
तक जाता हूँ कि ईश्वर-कृपा होगी तो इस  
तरह कर्ममें जुते हुए रहनेसे कान भी खुल  
जाय । लेकिन जब इस तरह कर्मयोगी बनोगे,  
तब कानकी परवाह थोड़ी रहेगी । वानर-गुरु

7405

तो जान-बूझ कर कान बंद करता है, क्योंकि  
आसपासकी आवाज उसके रास्तेमें रुकावट  
डालती है ।

२३-१०-'४४

भारी पासे जेसवामां कशुं नुकसान नथी. परंतु  
तेवे वणते मडादेव अने कृपालानी करता तेम  
तारे तकली यदाववी. पछी तारे हाथे धश्वरना  
समयनी चोरी नहीं थाय. तकली आपणो  
भूगो मित्र छे. ते कशो अवाज नथी करती  
अने दुनिया माटे जे तारनी जर छे ते काठे  
छे. तकली यदावतां यदावतां आपणो अंधुं लेध  
ने सांभणी शकीये छीये. हुं तो अटले सुधी  
कहुं के धश्वरनी महेरजानी हशे तो आ रीते  
काममां कायम लेडायेला रहेवाथी कान पण  
भूली जय. परंतु आ रीते तुं कर्मयोगी अने  
तो तने काननी आजी परवाये नहीं रहे. पेले  
वानरगुरु तो जणु भूजने पोताना कान ढांकी  
हे छे केम के आनुआनुथी आवता अवाज  
तेना मार्गमां अंतराय नाणे छे.

२३-१०-'४४

1861 Nnr 2

मेरी शांति और मेरे विनोदका रहस्य है मेरी ईश्वर, यानी सत्य पर अचल श्रद्धा । मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूँ । मुझमें ईश्वर है, वह मुझसे सब कुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूँ ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है, मेरे भलेके ही लिए है । इस ज्ञानसे भी मुझे खुश रहना चाहिये । 'बा' को ईश्वर ले गया सो 'बा' के भलेके लिए । इसलिए 'बा' का वियोग मुझे दुःख देनेवाला नहीं होना चाहिये । इस वास्ते विद्याकी मृत्युसे तुम्हारा दुःख मानना पाप समझो ।

२४-१०-'४४

मारी शांति अने विनोदनुं रहस्य ईश्वर ओटले के सत्य परनी मारी अचल श्रद्धामां छे. हुं कंठ न करवाने समर्थ नथी अने मने लान छे. परंतु ईश्वर मारामां वसे छे अने ते मारी पासै सर्व कंठ करावे छे. पछी मारे दुःख केवुं? वणी मारी पासै ते न कंठ करावे छे ते मारा लवाने माटे न छे अे पणु हुं लखुं छुं. आ

लानथी पणु भारे प्रसन्न रहैवुं न्नेधये. धश्वरे  
 जाने उठावी लीधी ते जाना लला भाटे. तेथी  
 जाना वियोगथी भारे दुःखी थवानुं न डाय.  
 आथी विधाना मृत्युनेा शोक करवेा ये पाप छे  
 येम समज.

२४-१०-'४४

शारीरिक काम ज़्यादा करो । पढ़नेका, पढ़ानेका  
 अवश्य करो, लेकिन तकली-चरखा पर ख़ूब काम  
 करो । भाजी साफ़ करो, आश्रमके काममें हिस्सा  
 लो और सब काम करनेमें ईश्वरके दर्शन करो,  
 क्योंकि ईश्वर सबमें भरा है ।

२५-१०-'४४

शारीरिक काम वधारे कर. लणुवालणुववानुं  
 ज़र कर, पणु तकली पर रेंटिया पर पूज काम  
 कर. शाकलाणु साई कर, आश्रमना काममां  
 लाग ले अने अधां काम करवामां धश्वरनां  
 दर्शन कर कारणु के धश्वर सर्वत्र रहैलेा छे.

२५-१०-'४४

मेरे लेखोंमें से जो निकालना है सो निकालो । यह काम अच्छा है । लेकिन शारीरिक परिश्रम खूब उठाना चाहिये । विद्याका स्मरण करना और रोना बहुत हानिकर है । वह स्मरण अच्छा है जो आत्माको ऊँचे चढ़ाता है, जागृत करता है । आत्माका स्वरूप सत् (सत्य), चित् (ज्ञान हृदयसे मिला हुआ, अनुभवसिद्ध) और आनन्द है । आनन्दमें दोनोंकी परीक्षा है—आनन्द भीतरका, जो बाहरमें देखनेमें आता है ।

२८-१०-'४४

भारा लेખોમાંથી જે કાઢવું હોય તે કાઢ. એ કામ સારું છે. પણ શારીરિક મહેનત ખૂબ કરવી જોઈએ. વિદ્યાનું સ્મરણ કરવું ને રોવું બહુ હાનિકર છે. આત્માને ઊંચે ચડાવે, જાગૃત કરે તે સ્મરણ સારું. આત્માનું સ્વરૂપ સત્ (સત્ય), ચિત્ (હૃદયમાંથી મળેલું, હૃદયમાં ઊભેલું અનુભવસિદ્ધ) અને આનંદ છે. આનંદમાં બંનેની પરીક્ષા છે. આનંદ અંતરનો જે બહાર જણાય છે તે.

૨૮-૧૦-'૪૪

सब ईश्वर करता है और वह जो करता है  
वह अच्छेके ही लिए है, ऐसा समझ कर आनंदमें  
रहो ।

१३-११-'४४

अधुं करनार धश्वर छे अने ते जे करे छे ते  
साराने माटे ज करे छे, अेम समञ्जने  
आनंदमां रडे.

१३-११-'४४

रोना हँसना दिलमें से निकलता है । (मनुष्य)  
दुःख मानकर रोता है । उसी दुःखको सुख  
मानकर हँसता है । इसलिए ही रामनामका  
सहारा चाहिये । सब उनको अर्पण करना तो  
आनंद ही आनंद है ।

१६-११-'४४

रैवुं अने हुसवुं अंने द्दिलमांथी नीकणे छे.  
(भाणस) जेने दुःख मानीने रुअे छे तेने ज  
सुख मानीने हुसे छे. आथी ज रामनामने।  
आधार जेध अे. अधुं अेने अर्पण करवुं अे  
तो आनंद ज आनंद छे.

१६-११-'४४

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम ढूँढ़ें तो वह है सत्, सत्य । इसलिए सत्य ही ईश्वर है ।

२०-११-'४४

धश्चरनां नाम तो अनेक छे, पणु अेक न नाम षे।णीअे तो ते छे सत्, सत्य. तेथी सत्य न धश्चर छे.

२०-११-'४४

सत्यके दर्शन बगैर अहिंसाके हो ही नहीं सकते । इसीलिए कहा है कि अहिंसा परमो धर्मः ।

२१-११-'४४

सत्यनां दर्शन अहिंसा वगर थध न शके. तेथी न कथुं छे के अहिंसा परमो धर्म.

२१-११-'४४

सत्यकी शोध और अहिंसाका पालन ब्रह्मचर्य,  
अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्मसमानत्व,  
अस्पृश्यतानिवारण, इत्यादि बगैर हो नहीं  
सकता ।

२२-११-'४४

सत्यनी शोध अने अहिंसातुं पालन प्रह्वचर्य,  
अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्मसमानत्व,  
अस्पृश्यतानिवारण इत्यादि वगर थई न शके.

२२-११-'४४

ब्रह्मचर्यका अर्थ यहाँ मनसा, वाचा, कर्मणा  
इंद्रियनिग्रह है । जो स्त्रीगमन नहीं करता हुआ  
मनसे विकारमय रहता है, वह सच्चा ब्रह्मचारी  
न माना जाय ।

२३-११-'४४

प्रह्वचर्यने। अर्थ अर्ही मन, वचन, कर्मथी  
इंद्रियनिग्रह छे. स्त्रीगमन न करवा छतां मनथी  
ने विकारमय रहे छे, ते अरे। प्रह्वचारी न  
मनाय.

२३-११-'४४



अस्तेयका अर्थ चोरी नहीं करना इतना ही नहीं है । जिस वस्तुकी हमें आवश्यकता नहीं है उसे रखना, लेना भी चोरी है । चोरीमें हिंसा तो भरी ही है ।

२४-११-'४४

अस्तेयनेो अर्थ चोरी न करवी अेटवेो न नथी. जे वस्तुनी आपणुने नइर नथी ते राखवी, देवी, ते पणु चोरी छे. चोरीमां हिंसा तो लरेली न छे.

२४-११-'४४

अपरिग्रहसे मतलब यह है कि हम कोई चीजका संग्रह न करें, जिसकी हमें आज दरकार नहीं है ।

२५-११-'४४

अपरिग्रहनेो अर्थ अे छे के, आपणुने जेनी आजे नइर नथी तेवी केअ थिजनेो आपणु संग्रह न करीअे.

२५-११-'४४

अभयमें सब प्रकारके डरका अभाव होना चाहिये ।  
 मौतका डर, मारपीटका डर, भूखका डर,  
 अपमानका डर, लोकलाजका डर, भूतप्रेतका डर,  
 किसीके क्रोधका डर — इन सब और ऐसे डरोंसे  
 मुक्ति अभय है ।

२६-११-'४४

अभयमां अधा प्रकारना उरनेा अभाव डोवो  
 लोडये. मोतनेा उर, मारपीटनेा उर, भूखनेा  
 उर, अपमाननेा उर, लोकलाजनेा उर,  
 भूतप्रेतनेा उर, डोडना क्रोधनेा उर — आ अधा  
 अने येवा उरथी मुक्ति ते अभय.

२६-११-'४४

जैसे हम अपने धर्मको आदर देते हैं ऐसे ही  
 दूसरे धर्मको दें — मात्र सहिष्णुता पर्याप्त  
 नहीं है ।

२७-११-'४४

जेम आपणे आपणा धर्मने मान आपीये  
 छीये, तेम न थील धर्मने पणु आपीये —  
 मात्र सहिष्णुता पूरती नथी.

२७-११-'४४

अस्पृश्यतानिवारणके मानी हरिजनोंको छूना इतना ही नहीं, लेकिन उनको हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना । अर्थात् जैसे हमारे भाईबहनोंसे बरतते हैं ऐसे उनसे बरतना । न कोई ऊँच है, न कोई नीच ।

२८-११-'४४

अस्पृश्यतानिवारणेने अर्थ हरिजनेने अडवुं  
 येटवे। न नथी, पण तेमने आपणां सगां-  
 संबंधीये। जेवा समजवा : अर्थात् आपणां  
 भाडण्डेने साथे वर्तीये छीये तेवी रीते वर्तवुं.  
 नथी केअं अंय के नथी केअं नीय.

२८-११-'४४

## योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

यह पातंजल योगदर्शनका पहला सूत्र है । योग चित्तवृत्तिका निरोध है, यानी हमारे दिलमें उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उन्हें दबा देना, यह योग हुआ ।

२९-११-'४४

## योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

ये पातंजल योगदर्शननुं पडेलुं सूत्र छे. योग चित्तवृत्तिने निरोध छे. अटले के आपणा मनमां उठता तरंगे पर अंकुश राखवे। — तेमने दाणी देवा, ते योग थये।

२९-११-'४४

जिसके चित्तमें तरंग उठते ही रहते हैं वह सत्यके दर्शन कैसे कर सकता है? चित्तमें तरंगका उठना समुद्रके तूफान जैसा है। तूफानमें जो सुकानी सुकान पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्तकी अशांतिमें जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

३०-११-'४४

जेना चित्तमां तरंगो उठ्या न करे छे, ते सत्यनां दर्शन केम करी शके? चित्तमां तरंगो उठवा ये समुद्रना तोक्षान जेवुं छे. तोक्षानमां जे सुकानी सुकान पर काणू राभी शके छे, ते सहीसलामत रहे छे. तेवी न रीते चित्तनी अशांतिमां जे रामनामनो आश्रय ले छे, ते ज़ती नय छे.

३०-११-'४४

“वृक्षनकी मत ले” भजन मनन करने योग्य है । वह तपता है और हमको शीतलता देता है । हम क्या करते हैं ?

१-१२-'४४

“ वृक्षनकी मत ले ”<sup>१</sup> लज्जन मनन करवा योग्य छे. पोते तपे छे ने आपणुने शीतलता आपे छे. आपणु शुं करीये छीये ?

१-१२-'४४

मिथ्याज्ञानसे हम हमेशा डरते रहें । मिथ्याज्ञान वह है जो हमको सत्यसे दूर रखता है या करता है ।

२-१२-'४४

मिथ्याज्ञानथी आपणु डुमेशां डरता रहेवुं. जे ज्ञान आपणुने सत्यथी दूर राणे छे अथवा दूर लध जय छे ते मिथ्याज्ञान छे.

२-१२-'४४

---

१. ज्यो परिशिष्ट नं. १.

सत्यके दर्शनके लिए संतोंका चरित पढ़ना और  
उसका मनन करना आवश्यक है ।

३-१२-'४४

सत्यनां दर्शनने माटे संतोनुं यश्चि वांच्युं  
अने तेनुं मनन करवुं आवश्यक छे.

३-१२-'४४

जब भगवान निज मुखसे कहते हैं, वे सब  
प्राणियोंमें विहार करते हैं, तो हम किससे वैर करें ?

(आजके भजनका अनुवाद)

४-१२-'४४

लगवान निज मुखे कहे छे के, पोते सर्वे  
प्राणीयोमां विहार करे छे, त्यारे आपणे केनी  
साथे वैर राभीशुं ?

(आजना लजनने अनुवाद)<sup>१</sup>

४-१२-'४४

---

१. ज्यो परिशिष्ट नं. २.

मीराबाईके जीवनसे हम बड़ी बात यह सीखते हैं कि उसने भगवानके लिए अपना सब कुछ छोड़ा — पति भी ।

५-१२-'४४

मीरांभाईना जवनमांथी महत्त्वनी वात आपणुं  
ये शीभीये छीये के, तेणुं भगवानने माटे  
पोतानुं सर्वस्व छोड्युं — पति पणु.

५-१२-'४४

श्रद्धासे मनुष्य क्या नहीं कर सकता ? सब कुछ कर सकता है ।

६-१२-'४४

श्रद्धाथी माणुस शुं नथी करी शकतो ? अंधुं न करी शके छे.

६-१२-'४४



શ્રદ્ધાસે મનુષ્ય પહાડોંકા ઉલ્લંઘન કરતા હૈ ।

૭-૧૨-'૪૪

શ્રદ્ધાથી માણસ પહાડો ઓળંગી જાય છે.

૭-૧૨-'૪૪

જો મનુષ્ય કિસી એક ચીજ પર એકનિષ્ઠાસે  
કામ કરતા હૈ, વહ આખિર સબ ચીજ કરનેકી  
શક્તિ હાસિલ કરેગા ।

૮-૧૨-'૪૪

જે માણસ કોઈ એક વસ્તુ ઉપર એકનિષ્ઠાથી  
કામ કરે છે તે અંતે બધી જ વસ્તુઓ કરવાની  
શક્તિ મેળવશે.

૮-૧૨-'૪૪

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता है, अंतरसे ही  
मिलता है ।

९-१२-'४४

सायुं सुख अहारथी नथी भणतुं, अंतरमांथी  
ज भणे छे.

९-१२-'४४

जिसने अपनापन खोया, उसने सब खोया ।

१०-१२-'४४

जेणे पातापणुं जेयुं तेणे अधुं ज जेयुं.

१०-१२-'४४

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है ।

ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते ।

११-१२-'४४

सीधो रस्तो जेवो सरण छे तेवो ज उठणु छे.

अम न डेात तो सौ सीधो रस्तो ज लेत.

११-१२-'४४

“ दया धर्मका मूल है ” — ऐसा तुलसीदासजीने कहा है और कहते हैं : “ तुलसी दया न छाँड़िये जब लग घटमें प्रान । ” हम सब दयाके भिक्षुक कैसे दया करें और किस पर ?

१२-१२-'४४

“ दया धर्मका मूल है ” — येम तुलसीदासजीके कह्युं छे अने कहे छे : “ तुलसी दया न छाँड़िये जब लग घटमें प्रान. ” आपणे सौ दयाना भिक्षुके केवी रीते दया करीये ने केना पर करीये ?

१२-१२-'४४

एक बहनने कहा : “ मैं प्रार्थना करती थी,  
अब छोड़ दी है । ” मैंने पूछा : “ क्यों ? ”  
उसने उत्तर दिया : “ क्योंकि मैं दिलको धोखा  
देती थी । ” उत्तर तो ठीक ही है, लेकिन  
धोखा देना छोड़े, प्रार्थना क्यों छोड़े?

१३-१२-'४४

એક બહેને કહ્યું : “ હું પ્રાર્થના કરતી હતી,  
હવે છોડી દીધી છે. ” મેં પૂછ્યું : “ કેમ ? ”  
તેણે જવાબ આપ્યો : “ કારણ કે હું મારા  
અંતરને છેતરતી હતી. ” ઉત્તર બરાબર છે; પણ  
છેતરવાનું છોડે, પ્રાર્થના શા માટે છોડે ?

૧૩-૧૨-'૪૪

कलका भजन बहुत मीठा और मननीय था ।  
 उसका सार यह है : भगवान न मंदिरमें है,  
 न मसजिदमें; न भीतर है, न बाहर; कहीं है  
 तो दीन जनोंकी भूख और प्यासमें है । चलो,  
 हम उनकी भूख और प्यास मिटानेके लिए  
 नित्य कातें या ऐसी मेहनत उनके निमित्त  
 रामनाम लेकर करें ।

१४-१२-'४४

कालनुं लजन<sup>१</sup> अहु मीठुं ने मननीय कुतुं.  
 तेनो सार आ छे : भगवान नथी मंदिरमां  
 के नथी मसजिदमां, नथी अंदर के नथी अहार;  
 कथांय डाय तो दीन जनोनी भूखतरसमां छे.  
 यावो, आपणु तेमनी भूखतरस मटाडवा माटे  
 शेज कांतीये अथवा तेमने निमित्ते रामनाम  
 लखने येवी जतमडेनत करीये.

१४-१२-'४४

१. लुओ परिशिष्ट नं. ३.

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठसे नहीं बचते ! भले वह शर्म या डरके मारे क्यों न हो । क्या अच्छा यह नहीं होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस आपसमें निडर होकर जैसा हमारे दिलमें है वैसा ही कहें ?

१५-१२-'४४

ये ते डेवी वात डे, आपणे सामान्य रीते पणु भूठथी दूर नथी रहिता ! लडे ये शरभ डे डरने कारणे डेम न डोय. तेना करतां आपणे मौन न धारणु करीये अथवा अंदर अंदर नीडर थडने आपणा मनमां डोय तेवुं न कडीये तो सारुं नडीं ?

१५-१२-'४४

थोड़ासा झूठ भी मनुष्यका नाश करता है, जैसे दूधको एक बूंद जहर भी ।

१६-१२-'४४

थोड़ुं सरभुं भूठ पणु माणसनेा नाश करे छे, नेम अेरनुं येक टीपुं पणु दूधनेा नाश करे छे.

१६-१२-'४४

सही चीज़के लिए वक़्त देना हमको खटकता  
है; निकम्मीके पीछे खुवार होते हं और खुश  
होते हैं!!!

१७-१२-'४४

भरी वस्तु पाछण वअत आपवानुं आपणुने  
भूंचे छे; नकामी वस्तु पाछण भुवार थछंये  
छींये ने भुश थछंये छींये!!!

१७-१२-'४४

“आदमको खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं;  
लेकिन खुदाके नूरसे आदम जुदा नहीं।”

१८-१२-'४४

“भाणुसने भुदा न कडेा, भाणुस भुदा नथी;  
पणु भुदाना नूरथी भाणुस भुदेा नथी।”

१८-१२-'४४

संतोंकी वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान हो लो;  
लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमें स्थान नहीं दिया  
तो कुछ नहीं किया ।

१९-१२-'४४

संतोनी वाणी सांभलो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान  
थई लओ; पणु न्ने ईश्वरने हृदयमां स्थान  
न आण्युं तो कांई न कर्युं.

१९-१२-'४४

मुक्ति तो हम सब चाहते हैं, लेकिन उसका  
अर्थ ठीक २ हम शायद नहीं जानते हैं । एक  
अर्थ तो यह है कि जन्म-मरणसे छुटकारा पाना ।

२०-१२-'४४

मुक्ति तो आपणु सौ धरछीये छीये, पणु  
कदाय तेनो अर्थ अराअर नथी लणुता. तेनो  
येक अर्थ तो ये छे के जन्ममरणथी  
छुटकारे। भेणववे।

२०-१२-'४४



भक्तकवि नरसैयो कहते हैं : “ हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जनमोजनम अवतार रे । ” इस दृष्टिसे देखें तो ‘ मुक्ति ’ कुछ और रूप लेती है ।

२१-१२-’४४

भक्त-कवि नरसैयो कहे छे : “ हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जनमोजनम अवतार रे. ” आ दृष्टिये लेखिये तो मुक्ति कंधक पीणुं स्वरूप धारणु करे छे.

२१-१२-’४४

अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है और वही अर्थ हम ईशोपनिषत्के पहले मंत्रमें पाते हैं ।

२२-१२-’४४

गीता अनुसार अनासक्तिनी पराकाष्ठा ते मुक्ति. आ ज अर्थ आपणुने ईशोपनिषदना पडेला मंत्रमां भणे छे.

२२-१२-’४४

अनासक्ति कैसे बढ़े? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरोंका — सब समान समझनेसे अनासक्ति बढ़ती है। इसलिए अनासक्तिका दूसरा नाम समभाव है।

२३-१२-'४४

अनासक्ति कैम वधे? सुख अने दुःख, मित्र अने शत्रु, पीतानुं अने पारकुं — अंधुं समान समजवाथी अनासक्ति वधे छे. तेथी अनासक्तिनुं भीनुं नाम समभाव छे.

२३-१२-'४४

जैसे बिंदुका समुदाय समुद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्रीका सागर बन सकते हैं। और जगतमें सब एक दूसरोंसे मित्र-भावसे रहें तो जगतका रूप बदल जाय।

२४-१२-'४४

अिंदुअेाने। समूह मणीने जेम समुद्र अने छे तेम आपणे मैत्री करीने मैत्रीना सागर अनी शकीअे छीअे. अने जगतमां सौ अेकभीज साथे मित्रभावे रहे तो जगतनुं रुप अदलाध लय.

२४-१२-'४४

आज ख्रिस्तमस दिन है । हम जो सब धर्मोंकी  
समानता मानते हैं, उनके लिए ईसा मसीहका  
जन्म ऐसा ही माननीय है जैसा राम-कृष्णादिका ।

२५-१२-'४४

આજ નાતાલનો તહેવાર છે. આપણે જેઓ  
સર્વધર્મસમભાવમાં માનીએ છીએ તેમને માટે  
ઈસા મસીહનો જન્મદિન રામકૃષ્ણાદિના  
જન્મદિન જેટલો જ આદરપાત્ર છે.

२५-१२-'४४

बीमारी मात्र मनुष्यके लिए शर्मकी बात होनी  
चाहिये । बीमारी किसी भी दोषकी सूचक है ।  
जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, उसे  
बीमारी होनी नहीं चाहिये ।

२६-१२-'४४

બીમારીમાત્ર માણુસને માટે શરમની વાત હોવી  
જોઈએ. બીમારી કોઈ પણ દોષની સૂચક  
છે. જેનું તન અને મન સર્વથા સ્વસ્થ છે  
તેને બીમારી થવી ન જોઈએ.

२६-१२-'४४

विकारी विचार भी बीमारीकी निशानी है ।  
इसलिए हम सब विकारी विचारसे बचते रहें ।

२७-१२-'४४

विकारी विचार पण बीमारीनी निशानी छे. तेथी  
आपणें सौ विकारी विचारथी हूर रडीये.

२७-१२-'४४

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय —  
रामनाम — है । नाम कंठसे ही नहीं, किंतु  
हृदयसे निकलना चाहिये ।

२८-१२-'४४

विकारी विचारथी हूर रडेवाने। अेक अमोघ  
उपाय — रामनाम — छे. नाम कंठमांथी न नडीं,  
पण हृदयमांथी नीकणवुं लेईये.

२८-१२-'४४

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं । अगर व्याधिको एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें, तो बहुतसी झंझटोंसे हम बच जायें ।

२९-१२-'४४

व्याधि अनेक छे, वैद्य अनेक छे, उपचार पणु अनेक छे. व्याधिने अेक ज गणीअे ने तेने मटाउनारे। वैद्य अेक राम ज छे अेम समुअे तो आपणुे धणी माथाकूटमांथी अयी जधअे.

२९-१२-'४४

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं, उनके पीछे हम भटकते हैं । लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा जिन्दा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं ।

३०-१२-'४४

वैद्यो ने दाकतरे। जेअे। मरे छे तेमनी पाछण आपणुे लटकीअे छीअे. पणु राम जे मरतो। नथी, उमेशां अेवे छे अने जे अथूक वैद्य छे तेने आपणुे लूली जधअे छीअे, अे आश्चर्यनी वात छे.

३०-१२-'४४

इससे भी आश्चर्य यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरनेवाले तो हैं ही, बहुत करें तो वैद्यादिकी दवासे शायद हम थोड़े दिन और काट सकते हैं और इसलिए ख्बार होते हैं ।

३१-१२-'४४

अथीये वधारे आश्चर्यनी वात तो अे छे के आपणे ज्ञानीये छीये के आपणे पणु भरवाना तो छीये न, अहु करीये तो वैदे। वगेरेनी भददथी कदाय थोडा दडुडा वधारे काढी शकीशुं तोये तेने माटे पुवार थर्छये छीये.

३१-१२-'४४

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, गरीब, सबको मरते हुए पाते हैं तो भी संतोषसे बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन थोड़े दिन जीनेके लिए रामको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं ।

१-१-'४५

ये ज़रूरीते वृद्ध, आणक, युवान, धनिक, गरीब सौने मरतां लोछये छीये तोपणु आपणु संतोषथी जेसवा भागता नथी, पणु थोडा द्दिवस ज़ुववा भाटे राम सिवायना अधा प्रयत्नो करीये छीये.

१-१-'४५

कैसा अच्छा हो कि इतना समझकर हम राम-भरोसे रहकर जो व्याधि आवे उसको भी बरदाश्त करें और अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें !

२-१-'४५

आटकुं समजने आपणु जे व्याधि आवे ते रामभरोसे रहिने वेडी लछये अने आपणुं ज़ुवन आनंदमय जनावीने गुजरीये तो केवुं सारुं !

२-१-'४५

शरीरधारी महादेवको शरीरसे और उसके लेखोंसे ही हम देखते थे । यह एक ही बात हुई । देहातीत महादेव सर्वव्यापी है और उसके गुणोंसे हम उसको पहचान सकते हैं और इसमें सब एकसा शरीक हो सकते हैं । किसीको ज्यादा कम विभाग नहीं मिल सकता है ।

३-१-'४५

देहधारी महादेवने तेना देह अने तेना देणेनी भाश्ते न आपणे जेता हुता. आ अेक न वस्तु थर्. देहातीत महादेव सर्वव्यापी छे अने तेना गुण्थी आपणे तेने अेण्णी शक्तीअे छीअे, अने तेमां सौ सरणे भाग लर् शके छे. केअेने वत्तो अेछे भाग नर्ही भणी शके.

३-१-'४५



जन्म और मरण शायद एक ही सिक्केकी दो बाजू नहीं हैं? एक तरफ़ देखो तो मरण और दूसरी तरफ़ जन्म । इसमें दुःख क्यों? हर्ष क्यों?

४-१-'४५

जन्म અને મરણ કદાચ એક જ સિદ્ધાંતની બે બાજુઓ નથી? એક તરફ જુઓ તો મરણ ને બીજી તરફ જુઓ તો જન્મ. તેમાં દુઃખ શા માટે? હર્ષ શા માટે?

४-१-'४५

जो जन्म-मरणकी बात सही हो, और है, तो हम क्यों मृत्युसे ज़रा भी डरें, दुःखी हों, और जन्मसे खुश हों? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ करे ।

५-१-'४५

જન્મમરણની વાત સાચી હોય ને સાચી છે, તો મૃત્યુથી આપણે શા માટે જરાયે ડરીએ, દુઃખી થઈએ, અને જન્મથી ખુશી થઈએ? દરેક માણસ પોતાની જાતને આ સવાલ પૂછે.

५-१-'४५

જગત્ દ્વંદ્વસે ભરપૂર હૈ । સુખકે પીછે દુઃખ રહા  
 હૈ, દુઃખકે પીછે સુખ । ધૂપ હૈ તો છાયા મી  
 હૈ, પ્રકાશ હૈ તો અંધેરા મી, જન્મ હૈ તો મૃત્યુ  
 મી । ઇસ દ્વંદ્વસે હટના અનાસક્તિ હૈ । દ્વંદ્વકો  
 જીતનેકા ઉપાય દ્વંદ્વકો મિટાના નહીં હૈ, લેકિન  
 દ્વંદ્વાતીત, અનાસક્ત હોના હૈ ।

૬-૧-'૪૫

જગત દ્વંદ્વોથી ભરેલું છે. સુખની પાછળ દુઃખ  
 ને દુઃખની પાછળ સુખ રહેલું છે. તડકો છે  
 તો છાંયડો પણ છે, પ્રકાશ છે તો અંધારું પણ  
 છે, જન્મ છે તો મૃત્યુ પણ છે. આ દ્વંદ્વોથી  
 દૂર રહેવું તે અનાસક્તિ. દ્વંદ્વોને જીતવાનો ઉપાય  
 તેમનો નાશ કરવો એ નથી, પણ દ્વંદ્વાતીત,  
 અનાસક્ત થવું એ છે.

૬-૧-'૪૫

यह पीछेका बताता है कि सबकी कुंजी सत्यकी आराधनामें है । सत्यकी उपासनासे सब चीज़ मिलती है ।

७-१-'४५

आ पाछुं सूयवे छे के अधानी यावी सत्यनी आराधनामां रही छे. सत्यनी उपासनामांथी सहु थीज भणी रहे छे.

७-१-'४५

तब सत्यकी आराधना कैसे हो ? सत्य कौन जानता है ? यहाँ सापेक्ष सत्यकी बात है । जिसे हम सत्य रूपसे देखें वह सत्य । इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभवसे प्रतीत होगा ।

८-१-'४५

त्यारे सत्यनी आराधना केम थाय ? सत्य केणु लणु छे ? अहीं सापेक्ष सत्यनी वात छे. आपणु ने सत्यरूपे लेधये ते सत्य. आटहुं सत्य पाणवानुं पणु धणुं मुश्केल छे येवी अनुभवे आतरी थशे.

८-१-'४५

जानता हुआ आदमी सत्य कहनेसे क्यों झिझकता है ? शर्मके मारे ? किसकी शर्म ? ऊपरी है तो क्या ? नौकर है तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमीको खा जाती है । हम सोचें और बुरी आदतसे छूट जायें ।

९-१-'४५

माणस जाणतो छतां सत्य कडेतां केम अयकाय छे ? शरमनेो मार्यो ? केनी शरम ? उपरी डाय तो शुं ? नोकर डाय तो शुं ? वात येम छे के आदत माणसने भाध जाय छे. आपणे विचार करीये अने भूरी आदत छोडी दधये.

९-१-'४५

छूटें नहीं तो सत्यके रास्ते पर नहीं जा सकते हैं । बात यह है कि सत्यके लिए सब कुछ क्रुबान करें । हम हैं ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं । कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊँच होना चाहें तो ऊँच काम करें, ऊँच विचारें ! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें । कोई रोज़ तब ऊँचे जायँगे ।

१०-१-'४५

[भूरी आदत] न छूटे तो सत्यने रस्ते न ञ्छ शक्य. वात येम छे के सत्यने भाटे ञ्छुं न कुरबान करवुं न्नेछ ये. आपणुं जेवा छीये तेवा देखावा नथी भागता पणुं येथी सारा देखावा भागीये छीये. अिया थवानी छच्छा होय तो अियां काम करीये ने अिया विचार करीये तो केवुं सारुं ! ये न ञ्नी शके तो लवे नीया देखाछ ये. तो न केछक दिवस अिये यडीशुं.

१०-१-'४५

जैसे अनुभव लेता हूँ, पाता हूँ कि आदमी  
अपने आप अपने सुख-दुःखका कारण है ।

११-१-'४५

अनुभव लेतो जेठें छुं तेम जेठें छुं के माणुस  
पेते ज पेतानां सुखदुःखनुं कारण छे.

११-१-'४५

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों होता है ?

१२-१-'४५

आम डोवा छतां माणुस सुभी दुःभी सा  
माटे थाय छे ?

१२-१-'४५

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार करना नहीं  
चाहता । इसलिए मानता है ऐसे विचार  
करनेकी फुरसत ही नहीं है ।

१३-१-'४५

वात अेम छे के माणुस आवा विचार करवा  
मागतो नथी. तेथी माने छे के आवा विचार  
करवानी कुरसद ज नथी.

१३-१-'४५

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

१४-१-'४५

आपणुं सायुं ज्वन गुजरवा भागता डोडये तो मानसिक आणस छोडीने आपणुं मौलिक विचार करवे। जेधशे. परिणाम ये आवशे के आपणुं ज्वन जहु सरण थध जशे.

१४-१-'४५

ज्ञानीने हमें मुसाफिर कहा है। बात सच्ची है। हम यहाँ तो चंद्र रोज़के लिए हैं। बादमें 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं। कैसा अच्छा और सच्चा खयाल!

१५-१-'४५

ज्ञानीयेये आपणुने मुसाफिर कया छे. वात सायी छे. अही तो आपणुं थोडा द्विस भाटे छीये. पछी 'मरता' नथी, आपणुं घेर जधये छीये. केवे। सरस ने साये। विचार!

१५-१-'४५

हजारों मन कचरा बड़े परिश्रमसे निकालते हैं तब कोई हीरा हाथोंमें आता है । क्या हम इस परिश्रमका थोड़ा हिस्सा भी कचरा रूप झूठ निकालनेमें और हीरा रूप सत्य ढूँढ़नेमें देते हैं ?

१६-१-'४५

हुजारे। मणु क्यरे। भूण परिश्रम करीने काढीये त्तारे केाई हीरे। हाथ लागे छे। आपणु अवे। थोडा पणु परिश्रम क्यराइपी झूठ काढवाने अने हीराइपी सत्य शोधवाने माटे करीये छीये थरा ?

१६-१-'४५

बगैर परिश्रमसे, यानी बगैर तपके, कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्मशोध कैसे हो सके ?

१७-१-'४५

परिश्रम वगर अटले के तप वगर कशुं न थई शक्तुं नथी तो। पछी आत्मशोध केम थई शके ?

१७-१-'४५



अगर सब समय भगवान्का है तो हम एक  
क्षण भी निकम्मी क्यों जाने दें? अगर हम  
भगवान्के हैं तो हमारे शरीरका एक हिस्सा  
भी मौजशौकमें क्यों दें?

१८-१-'४५

जे अधे समय लगवानेो डाय तो आपणे अेक  
क्षण पणु नकामी केम ज्वा दधये? आपणे  
लगवानेो डायये तो आपणु शरीरनेो अेक  
भाग पणु मेजशौकमां केम आपीये?

१८-१-'४५

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि अनासक्त  
कार्य भगवान्-भक्ति है ।

१९-१-'४५

अनासक्त कार्य शक्ति आपनारुं छे, कारणुं के  
अनासक्त कार्य अे लगवानेो लक्ति छे.

१९-१-'४५

जमशेद महेताने आसीसीके फ्रान्सिसकी एक प्रार्थना भेजी है । उसमें यह हिस्सा है : “ हे भगवान्, किसीको देनेसे ही हमें मिलता है, मरनेसे ही हम अमर पद पा सकते हैं । ”

२०-१-'४५

जमशेद महेताने आसीसीना फ्रान्सिसनी ओक प्रार्थना भेजली छे. तेमां आ लाग आवे छे : “ हे भगवान्, केधने आपवाथी ज अमने भणे छे. मरीने ज अमे अमरपद प्राप्त करी शकीअे छीअे. ”

२०-१-'४५

जमीनका मालिक तो वही है जो उस पर मेहनत करता है ।

२१-१-'४५

जमीनने। मालिक तो ते ज छे जे तेना पर मजदूरी करे छे.

२१-१-'४५

जो सचमुच भीतरमें स्वच्छ है वह बाहरमें  
अस्वच्छ हो ही नहीं सकता ।

२२-१-'४५

जे अंतरमां अरेअर स्वच्छ छे ते अडार  
अस्वच्छ होई न शके.

२२-१-'४५

सच्चा कार्य कभी निकम्मा नहीं होता, सच्चा  
वचन अंतमें कभी अप्रिय नहीं होता ।

२३-१-'४५

सायुं कार्य कही नकाभुं नथी थतुं, सायुं  
वचन अंते कही अप्रिय नथी थतुं.

२३-१-'४५

शुद्ध हृदयसे निकला हुआ वचन कभी निष्कल  
नहीं होता ।

२४-१-'४५

शुद्ध हृदयमांथी नीकजेलुं वचन कही निष्कल  
नथी थतुं.

२४-१-'४५

आलस्यसे हमें दुःख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे । ऐसे ही यदि हमें व्यभिचारसे दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे, नहीं रहेंगे ।

२५-१-'४५

आणसथी आपणुने दुःख थशे तो आपणु आणसु नहुँ रहीये. ये ज रीते आपणुने व्यभिचारथी दुःख थशे तो आपणु व्यभिचारी नहुँ जनीये, नहुँ रहीये.

२५-१-'४५

प्रथम काम, बादमें मिले तो, दाम जितना काम । यह तो हुई परमात्माकी सेवा । अगर दाम पहले माँगोगे तो वह हुई शैतानकी सेवा ।

स्वतंत्रता दिन

२६-१-'४५

प्रथम काम, पछी भजे तो, काम जेटला दाम. या थर्ध परमात्मान्नी सेवा. दाम पडेलां भागे तो ते थर्ध शैतानन्नी सेवा.

स्वातंत्र्य दिन

२६-१-'४५

कामनाको संतुष्ट नहीं करना अच्छा है । लेकिन  
शुरू करनेके बाद उसे रोकना असंभव नहीं  
तो कठिन तो है ही ।

२७-१-'४५

कामनाने न संतोषवी ज्ये सारुं छे. पणु शरु  
क्या पछी तेने रोकवी असंभवित नहुं तो  
मुश्केल तो छे न.

२७-१-'४५

जो मनुष्य अपने पर क्राबू नहीं रख सकता है,  
वह दूसरों पर कभी सच्चा क्राबू नहीं रख  
सकता ।

२८-१-'४५

जे माणुस पोता पर काणू नथी राणी शकते।  
ते भील पर कही साथे काणू नहुं राणी शके.

२८-१-'४५

अपनेको पहचाननेके लिए मनुष्यको अपनेसे बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपनेको देखना है ।

२९-१-'४५

पेताने ओणभवाने माटे माणुसे पेतामांथी  
अडार नीकणी तटस्थ अनीने पेताने लेवे।  
लेधये.

२९-१-'४५

जो मनुष्य किसीका भी बोझ हलका करता है  
वह निकम्मा नहीं है ।

३०-१-'४५

जे माणुस केाधनेये जेले डलके करे छे  
ते नकाभे। नथी.

३०-१-'४५

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करनेमें  
हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं कि जो  
दूसरे कहें या करें उसे करनेमें ।

३१-१-'४५

आपणुं जेने सायुं ने शुभ मानीये ते ज  
करवामां आपणुं सुख छे, आपणुं शांति  
छे, नहुं के भीज कडे के करे ते करवामां.

३१-१-'४५

पुख्त वाचनसे शक्ति तो आती है, लेकिन बिना  
ज्ञानके सही स्वतंत्रता नहीं मिलती ।

१-२-'४५

पुख्त वाचनथी शक्ति तो आवे छे पणु  
ज्ञान वगर सायी स्वतंत्रता नथी भणती.

१-२-'४५

किसीकी मेहरबानी मांगना अपनी आज्ञादी  
बेचना है ।

२-२-'४५

केधनी भडेरथानी भागवी अटवे आपणुं  
स्वतंत्रता वेयवी.

२-२-'४५

मनुष्यकी प्रतिष्ठा उसके दिलमें — हृदयमें है,  
नहीं कि उसके मस्तिष्कमें, यानी बुद्धिमें ।

३-२-'४५

माणुसनी प्रतिष्ठा तेना दिलमां — हृदयमां छे,  
नहीं के तेना मगजमां अटले के बुद्धिमां.

३-२-'४५

धर्म वह है जो सब धारण करता है, यानी सब  
हिस्सेमें सब समय जीवनमें ओतप्रोत है ।

४-२-'४५

सर्वने धारण करे ते धर्म, अटले के धर्म दरेक  
अवस्थामां ने दरेक समये जवनमां ओतप्रोत छे.

४-२-'४५

धर्म कुछ जीवनसे भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म  
माना जाय । बगौर धर्मका जीवन मनुष्य-जीवन  
नहीं है, वह पशु-जीवन है ।

५-२-'४५

धर्म कंठ जवनथी सिन्न नथी, जवनने न  
धर्म मानवे। जेधअे. धर्म वगरनुं जवन  
मनुष्यजवन नथी, पशुजवन छे.

५-२-'४५



जो ज़्यादा क्राबू पाते हैं या ज़्यादा काम करते हैं, वे कमसे कम बोलते हैं । दोनों साथ मिलते ही नहीं । देखो, कुदरत सबसे ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है ।

६-२-'४५

जेओ वधारे काणू भेणवे छे अथवा वधारे काम करे छे तेओ ओछामां ओछुं ओले छे. अंने वस्तु साथे जेवानी भणती नथी. जुओ, कुदरत सौथी वधारे काम करे छे, अंधती नथी, छतां भूंगी छे.

६-२-'४५

जो दुःखियोंका ही ख्याल करता है वह अपना ख्याल नहीं करेगा, उसको इतना समय कहाँसे ?

७-२-'४५

जे दुःखी जेनेने ज विचार करे छे ते पोताने विचार नई करे. तेने ओटले समय कथांथी डेय ?

७-२-'४५

मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा,  
 सुनना चाहता है वही सुनेगा । जैसे माली  
 बगीचेमें फूलको ही देखेगा, फिलसूफको पता  
 भी नहीं लगेगा बगीचेमें क्या है । [ वह ] बगीचेके  
 बाहर है या भीतर उसका भी पता उसे शायद  
 नहीं होगा ।

८-२-'४५

माणस જે જોવા ઇચ્છશે તે જ જોશે, સાંભ-  
 ળવા માગશે તે જ સાંભળશે. જેમ કે માળી  
 બગીચામાં ફૂલ જ જોશે ને ફિલસૂફને બહાર  
 પણ નહીં પડે કે બગીચામાં શું છે. પોતે  
 બગીચાની બહાર છે કે અંદર તેની પણ કદાચ  
 તેને બહાર નહીં હોય.

૮-૨-'૪૫

जिनके साथ हमारा सहवास है उनसे अपनी  
त्रुटियाँ देख सकते हैं और सुधार भी सकते  
हैं । बेहतर है कि हम रोजके व्यवहारको शुद्धतम  
रखें तो सच्चे सेवक बननेकी आशा रख सकते हैं ।

९-२-'४५

जेमनी साथे आपणे। सहवास छे तेमनी  
भारक्षत आपणे आपणी जामीये। जेध  
शकीये ने सुधारी पण शकीये. वधारे सारुं  
तो ये छे के आपणे आपणे। रोजने। वडेवार  
शुद्धतम राभीये; तो ज आपणे साथे  
सेवक बनवानी आशा राभी शकीये.

९-२-'४५

सत्यके व्रतकी शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी मौनका सेवन करे । ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं । कारण स्पष्ट है — आदत । हम इस आदतको छोड़ें ।

१०-२-'४५

सत्यना व्रतनी शुद्ध निशानी એ છે કે સત્યાર્થી  
મૌન સેવે. આમ હોવા છતાં આપણે જોઈએ  
છીએ કે ઘણા સત્યાર્થીઓ બહુ વાતો કરે છે.  
કારણ સ્પષ્ટ છે — આદત. આપણે આ આદત  
છોડીએ.

૧૦-૨-'૪૫

मृत प्रियजनका स्मरण कैसे करें? मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर मरता है। लेकिन स्मरण तो कायम रखना ही है, उनके सब गुण हमारेमें यथाशक्ति उतारकर, उनकी शुभ प्रवृत्ति अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर। समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरणको बढ़ानेके लिए है। अगर फूलोंसे ही संतुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ति-पूजा कहूँगा।

११-२-'४५

मृत प्रियजननुं स्मरणु कर्ध रीते करीये? भारे। दृढ विश्वास छे के तेये। मरतां नथी, शरीर मरे छे. पणु स्मरणु तो कायम राखवुं न छे, तेमना सर्वे गुणु। आपणुमां यथा-शक्ति उतारीने, तेमनी शुभ प्रवृत्ति अपनावीने ने तेमां वृद्धि करीन. समाधि पर फूल वगेरे यडाववां ते आ स्मरणु वधारवा भाटे छे. झूठोथी न संतोष मानीये तो हुं तेने मूर्ति-पूजा कहुं.

११-२-'४५

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें  
और दूसरोंको साफ़ रहनेकी सलाह दें !

१२-२-'४५

आपणु पोते भेदा रहींये अने भीज्जयेाने  
स्वच्छ रहैवानी सलाह आपीये ये केटहुं  
पोहुं छे !

१२-२-'४५

दूसरे और हमारेमें, सारे जगत्में जो भेद है  
वह अंशका या दरजोंका ही है, जातिका कभी  
नहीं, जैसे एक ही जातिके वृक्षोंमें होता है ।

इसमें क्रोध क्या, द्वेष क्या, भेद क्या ?

१३-२-'४५

भीज्जयेामां ने आपणुामां, आपी दुनियामां  
जे इरक छे ते जेम अेक ज्जतनां वृक्षामां  
डाय छे तेवे। अंश के दरजाने। ज्ज छे; ज्जतने।  
नथी ज्ज. अेमां क्रोध शे।, द्वेष शे।, भेद शे। ?

१३-२-'४५

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे, लेकिन  
विचारपूर्वक करे तो उसे कभी न छोड़े ।

१४-२-'४५

माणस लदे केई शुभ निश्चय पणु न करे,  
पणु विचारपूर्वक करे तो ते कही न छोडे.

१४-२-'४५

आदमीकी अपनेको धोखा देनेकी शक्ति इतनी  
है कि वह दूसरोंको धोखा देनेकी शक्तिसे बहुत  
अधिक है । इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक  
समझदार आदमी है ।

१५-२-'४५

माणसमां भीलने छेतरवानी शक्ति करतां  
पेताने छेतरवानी शक्ति धणी वधारे छे.  
दरेक समज्जु माणस आ वातनुं प्रत्यक्ष  
प्रमाण छे.

१५-२-'४५

जो गुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकनेमें जय है । परजन पर गुस्सा रोकनेके लिए हम मजबूर हो जाते हैं । उसमें जय कैसे ?

१६-२-'४५

स्वजन पर गुस्से। थडे ते रोकवामां जय छे. पारका पर आवतो। गुस्से। तो आपणु दायारीथी रोक्ये छीये. तेमां जय शाने। ?

१६-२-'४५

जीना मानी मौज करना — खाना, पीना, कूदना — नहीं, लेकिन ईश्वरकी स्तुति करना अर्थात् मानव-जातिकी सच्ची सेवा करना ।

१७-२-'४५

जुवुं अटले भोज करवी — भावुं, पीवुं, कूदवुं — नहीं, पर धर्मरनी स्तुति करवी अर्थात् मानवजातिनी साथी सेवा करवी.

१७-२-'४५



मनुष्य-जीवन और पशु-जीवनमें फ़रक क्या है ?  
इसका संपूर्ण विचार करनेसे हमारी काफ़ी  
मुसीबतें हल होती हैं ।

१८-२-'४५

मनुष्यजीवन अने पशुजीवनमां इरक शे। ?  
अने। पूरेपूरे। विचार करवाथी आपणी धाणी  
मुश्केलीअने। निवेडो आवी जय छे.

१८-२-'४५

मनुष्य जब अपनी हृदसे बाहर जाता है, हृदसे  
बाहर काम करता है, विचार भी करता है,  
तब उसे व्याधि हो सकती है, क्रोध आ सकता  
है । ऐसी जल्दबाज़ी निकम्मी है, नुक़सान भी  
कर सकती है ।

१९-२-'४५

माणस ज्यारे पोतानी डुदथी अडार जय,  
डुदथी अडार काम करे, डुदथी अडार विचार  
पणु करे त्यारे तेने व्याधि थाय, क्रोध आवे  
अवे। संभव छे. आवी दोडादोड नकामी छे,  
नुक़सान पणु करे.

१८-२-'४५

आज प्रातःकालके भजनमें था, ईश्वर हमको  
कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं वही सच्चा  
दुःख ।

२०-२-'४५

आज प्रातःकालके भजनमें आत्मा के ईश्वर  
आपणने कही भूलतो नथी. आपणने तेने भूली  
जिधये छीये ये ज अरुं दुःख छे.

२०-२-'४५

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन  
बचायेगा, न मात-पिता, न बड़ा डाक्टर!!! तब  
हमें क्या करना चाहिये ?

२१-२-'४५

ज्यारे ईश्वर नथी अयाववा भागतो त्यारे  
नहीं धन अयावे, नहीं मातपिता अयावे  
के नहीं मोटो डाक्टर अयावे!!! त्यारे  
आपणने शुं करवुं जेधये ?

२१-२-'४५

हमारी गंदगी हमने जब नहीं निकाली है, तब तक प्रार्थना करनेका हमें कुछ हक है क्या ?

२२-२-'४५

आपणु आपणी गंदगी काठी नथी त्यां सुधी प्रार्थना करवाने। आपणुने कुक छे थरे ?

२२-२-'४५

माला लें, उसे संतने फिराई है, वह तुलसी या सुखडकी है, रुद्राक्ष हो, लेकिन फेरनेवाला यदि मालामें ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे । यदि माला उसको परमात्माके नजदीक ले जाती है, अपने कर्तव्यमें सावधान करती है, तो भले उसे विधिवत् ले और फिरावे ।

वर्धा, २३-२-'४५

भाणा लधये. ते संतोये ईश्वी छे, ते तुलसी के सुभडनी छे, रुद्राक्षनी डाय. पणु ईश्वनार माने के भाणामां न सर्वस्व छे तो ते ईंकी देवी लधये. ले भाणा तेने परमात्मानी नलुक लध नती डाय, पोताना कर्तव्यमां सावधान करती डाय तो लवे तेने विधि प्रमाणु ले ने ईश्वे.

वर्धा, २३-२-'४५

हम हैं क्योंकि ईश्वर है । इसीसे हम देखते हैं कि मनुष्यमात्र, जीवमात्र ईश्वरका अंश है ।

२४-२-'४५

आपणु छीअे केम के धश्वर छे. आ परथी  
७ आपणु लेध शकीअे छीअे के मनुष्यमात्र,  
जुवमात्र धश्वरने। अंश छे.

२४-२-'४५

नये करारमें एक यह वाक्य है : “ तेरे दिलमें न चिंता रहे, न तू किसीका भय रखे । ” यह वचन उसके लिए है जो परमात्माको मानता है ।

२५-२-'४५

नवा करारमां अेक आ वाक्य छे : “तारा मनमां चिंता न रहो, न केधने। लय रहो.”  
आ वचन परमात्माने माननारने माटे छे.

२५-२-'४५

वही नया करार कहता है कि अगर ईश्वर हमें लालचमें डालता है, तो उसमेंसे बच जानेका रास्ता भी वही बताता है । यह बात सही उन्हींके लिए है जो अपने आप लालचमें फँसते नहीं ।

२६-२-'४५

એ જ નવો કરાર કહે છે કે જો ઈશ્વર આપણને લાલચમાં નાખે છે તો તેમાંથી બચી જવાનો રસ્તો પણ તે જ બતાવે છે. જેઓ પોતાની મેળે લાલચમાં ફસાતા નથી તેમને માટે જ આ વાત સાચી છે.

૨૬-૨-'૪૫

नामकी महिमा सिर्फ तुलसीदासजीने ही गाई है ऐसा नहीं है । बाईबलमें मैं वही पाता हूँ । दसवें रोमनकी १३ कलममें कहते हैं, जो कोई ईश्वरका नाम लेंगे वे मुक्त हो जायँगे ।

२७-२-'४५

नामनो महिमा केवल तुलसीदासजीने न गाये। छे अेवुं नथी। आधुनिकमां पणु हुं अे नु जेडे छुं। दसमा रोमननी १३मी कलममां कडे छे नु केअि धश्वरनुं नाम लेशे ते मुक्ति पाभशे।

२७-२-'४५

गुनाह छिपा नहीं रहता । वह मनुष्यके मुख पर लिखा रहता है । उस शास्त्रको हम पूरे तौरसे नहीं जानते, लेकिन बात साफ़ है ।

२८-२-'४५

गुनो छुपे। नथी रहेतो। ते भाणुसना मोढा पर लभेले। डोय छे। अे शास्त्र आपणु पूरेपूरी रीते नणुता नथी, पणु अे वात स्पष्ट छे।

२८-२-'४५

आजकल बाईबलके फ़िकरे पढ़ रहा हूँ । आज यह देखता हूँ : “श्रद्धासे जो कुछ तुम माँगोगे, तुम्हें मिलेगा ।” (मैथ्यु २१-२२)

१-३-'४५

आजकाल आर्धभलना इकरा वांयुं छुं. आजे आ लोवामां आंयुं : “श्रद्धापूर्वक जे कांई भागशे। ते तमने भणशे.”

(मैथ्यु २१-२२)

१-३-'४५

‘निर्बलके बल राम’ के जैसा ही साम ३४-१८ में है । जो टूट गया है उसके नज़दीक परमात्मा है ही, और जिसको सच्चा पश्चात्ताप हुआ है उसे बचा लेता है ।

२-३-'४५

‘निर्बलके बल राम’ जेवुं ज वाक्य साम ३४-१८मां छे. जे लांगी पडयो छे तेनी नजुक परमात्मा छे ज, अने जेने साथे। पश्चात्ताप थयो छे तेने अयावी ले छे.

२-३-'४५

आइझाया ४१-१० में कहता है : डरो नहीं,  
क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है ।

३-३-'४५

आइझाया ४१-१०मां कडे छे : डरो नड्डीं,  
केम के परमात्मा तमारी पासो ज छे.

३-३-'४५

एक ईश्वरमें ही संपूर्ण शक्ति है । इसलिए  
ईश्वरमें ही हमेशाके लिए विश्वास रखा जाय,  
इन्सान पर कभी नहीं ।  
( आइझाया २६-४ से )

४-३-'४५

ओके ईश्वरमां ज संपूर्ण शक्ति छे. तेथी  
ईश्वर पर ज हुंमेशां लरोसो राखवो, भाणुस  
पर कदी नड्डीं. (आइझाया २६-४मांथी)

४-३-'४५



पानीका स्वभाव नीचे जानेंका है । इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है, इसलिए सहल होना चाहिये । सद्गुण ऊँचे ले जाता है, इसलिए मुश्किल-सा लगता है ।

५-३-'४५

पाणीनो स्वभाव नीचाणु तरश्च ज्वानो छे. ते ज प्रमाणे दुर्गुणु नीचे लध जय छे, अटले अ सडेकुं डाय. सद्गुणु अचे यडावे छे अटले मुश्केल डाय अम लागे छे.

५-३-'४५

“मेरी कृपा तेरे लिए काफी होनी चाहिये, क्योंकि मेरा बल दुर्बलतामें ही पूर्ण होता है ।”  
( २ कोर : १२-९ )

६-३-'४५

“भारी कृपा तारे माटे पूरती थवी जेधअे, कारणु के भारुं जण दुर्बलतामां ज पूर्णु थाय छे.” ( २ डेर : १२-६ )

६-३-'४५

“ ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्तिके समयमें हमारी रक्षा करता है । ” ( साम ४६-१ )

७-३-'४५

“ ईश्वर आपणो आश्रय छे, ओ ओ आपणुं अण छे अने ते ओ आपत्तिने वणते आपणो रक्षा करे छे. ” ( साम ४६-१ )

७-३-'४५

ईश्वरका कौल है : मैं आज हूँ, कल था, भविष्यमें हूँगा; मैं सब जगहमें हूँ, सबमें हूँ । इतना जानते हुए भी हम ईश्वरसे दूर भागते हैं और [जो] विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूँढते हैं और दुःखी होते हैं । इससे अधिक आश्चर्य किसीमें है ?

८-३-'४५

ईश्वरनेो केाल छे : हुं आणे छुं, काले हुतो, लविष्यमां डेअशि; हुं सर्व डेकाणे छुं, सर्वमां छुं. आटहुं अणुतां छतां पणु आपणे ईश्वरथी दूर लागीअे छीअे अने ओ नाशवंत ने अपूर्ण छे तेनेो आश्रय शोधीअे छीअे ने दुःखी थछअे छीअे. आथी मोहुं आश्चर्य भीअुं कयुं ?

८-३-'४५

पूर्व पश्चिममें भेद न करें । हरेक वस्तु कहींकी हो, उसकी तुलना गुण-दोष पर करें तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं ।

९-३-'४५

पूर्व पश्चिममां भेद न करीये. हरेक वस्तुनी तुलना, ते गमे त्यांनी होय तोपण, तेना गुण-दोष पर करीये. तो न शुद्ध न्याय तोणी शक्यीये.

९-३-'४५

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों ? ईश्वर होते हुए ईश्वर व्यक्ति नहीं है । वह नियम है, नियंता भी । इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य कर्मका भोग बनता है । सत्कर्मसे चढ़ता है, दुष्कर्मसे पड़ता है ।

१०-३-'४५

पाप-पुण्य, सुख-दुःख शा माटे ? ईश्वर छे पण ते व्यक्ति नथी. ते नियम छे, नियंता पण छे. आनेा अर्थ ये थये। के मनुष्य कर्मनेा भोग अने छे. ते सत्कर्मथी अडे छे, दुष्कर्मथी पडे छे.

१०-३-'४५

समाजकी सच्ची सेवा वह है जिससे समाज, मानी सब लोग, ऊँचे चढ़े । समाज देखकर ही मनुष्य कह सकता है, अमुक समाज कैसे ऊँचे चढ़े ।

११-३-'४५

जे वडे समाज अटले के सौ दोडे। अये यडे ते साथी समाजसेवा छे, अमुक समाज कर्षरीते अये यडे ते माणुस समाज लेधने न कही शके.

११-३-'४५

मनुष्य जानता है कि जब मरनेके नज़दीक पहुँचता है सिवाय ईश्वरके कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है । ऐसे क्यों ?

१२-३-'४५

माणुस जाणे छे के ते भरणु समीप पड़ेअये छे त्तारे तेने माटे धश्वर सिवाय भीन्ने कशे। आधार नथी, तेम छतां ते रामनाम लेतां अयकाय छे. अेम केम ?

१२-३-'४५

अहिंसाके मार्गत स्वतंत्रता पानेका एक ही मार्ग  
है : मर कर जीते हैं, मार कर कभी नहीं ।

१३-३-'४५

अहिंसा मारते स्वतंत्रता भोगवाने। अकेले  
मार्ग छे. मरीने ज़ुबाने, मारीने कही नहीं।

१३-३-'४५

मरें कैसे ? आत्महत्या करके ? कभी नहीं ।  
आवश्यकता पर मरनेकी तैयारी रखकर मरें  
तब तो जिंदा रहनेके लिए मरें ।

१४-३-'४५

कैसे मरें ? आत्महत्या करीने ? कही  
नहीं. ज़रूर पड़तां मरवानी तैयारी राभीने  
मरीये तो तो ज़ुबाने रहेवा भाटे मरीये.

१४-३-'४५

धैर्यसे, शांतिसे क्या क्या नहीं हो सकता है !  
उसका तजर्बा जो लेना चाहें उनको रोज़ मिल  
सकता है ।

१५-३-'४५

धैर्यथी, शांतिथी शुं नथी थर् शक्तुं ! अने।  
अनुभव ने देवा भागे तेने रोज़ मणी शके.

१५-३-'४५

किस्मत और पुरुषार्थका झगड़ा रोज़ चलता है ।  
हम पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर  
पर छोड़ें ।

१६-३-'४५

लाज्य अने पुरुषार्थने। अधडे। रोज़ यात्या।  
करे छे. आपणे पुरुषार्थ कर्या करीये अने  
परिणाम धश्वर पर छोडीये.

१६-३-'४५

क्रिस्मत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थका फांका करें । क्रिस्मत चलती रहेगी । हम देखें कहां दखल दे सकते हैं, देना फ़र्ज होता है, परिणाम कुछ भी हो ।

१७-३-'४५

अधुं लाज्य पर न छोडी दध् अने पुरुषार्थने।  
 झंके। पणु न राभीअे. लाज्य आल्यां करशे.  
 आपणु जेवानुं अे छे के तेने आपणु केटकुं  
 वाणी शकीअे छीअे. अेम करवानी आपणी  
 करज छे, परिणाम लवे गमे ते आवे.

१७-३-'४५

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर नहीं पाते । इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिए दे ।

१८-३-'४५

दुःखद वस्तु तो अे छे के शुं करवुं ते जणुवा  
 छतां आपणु ते करी शकता नथी. आने।  
 उत्तर दरेक पोतपोतानी भेजे आपे.

१८-३-'४५

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूँ कि मौन सर्वोत्तम  
भाषण है । अगर बोलना ही चाहिये तो कमसे  
कम बोलो । एक शब्दसे चले तो दो नहीं ।

१९-३-'४५

हुं प्रत्येक क्षण अनुभवुं छुं के मौन ये  
सर्वोत्तम भाषण छे. जोलवुं न पडे तो ओछामां  
ओछुं ओलो. ओक शब्दथी यावे तो ये न ओलो.

१९-३-'४५

छोटी २ बातें जब हलाक करें तब समझना  
कि कहाँ भी आसक्ति है । उसे ढूँढो और  
निकालो । बड़ी बातोंमें हम सीधे रहते हैं ऐसा  
मानना भ्रम है । बड़ी बातोंमें हम मजबूर होते  
हैं । उसका नाम सीधापन नहीं है ।

२०-३-'४५

नानी नानी जाओतो डेरान करे त्यारे समजवुं  
के कथांक आसक्ति रडेली छे. तेने शोधी  
काढीने दूर करे. मोटी जाओतोमां आपणुं  
सीधा यादीये छीये येम मानवुं ये भ्रम  
छे. मोटी जाओतोमां आपणुं लायार डोछये  
छीये. ये सीधापणुं न कडेवाय.

२०-३-'४५



ऐसे मौक़े पर याद रखनेका श्लोक यह है :  
मात्रास्पर्श आते हैं जाते हैं, उसे सहन करो ।

२१-३-'४५

એવે પ્રસંગે યાદ રાખવાનો શ્લોક આ છે :  
ઇન્દ્રિયોના વિષયો ભેડેના સ્પર્શો આવે છે ને  
ભય છે; તેમને સહન કર.

२१-३-'४५

जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न करें ।  
इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है । आज  
ख़ूब हुआ । बा की तिथि थी । गीता-पारायण  
था । उसमें कुछ भी रस नहीं था ।

२२-३-'४५

જે કંઈ કરીએ તે સુવ્યવસ્થિત કરીએ અથવા  
ન કરીએ. આનું પ્રત્યક્ષ દર્શન રોજ થાય છે.  
આજે સારી પેઠે થયું. બાની પુણ્યતિથિ હતી.  
ગીતાપારાયણ ચાલતું હતું. પણ તેમાં કશોયે  
રસ નહોતો.

२२-३-'४५

गलती गलती मिटती है जब दुरस्ती कर लेते हैं । गलती जब दबा देते हैं, तब फोड़ाके जैसी फूटती है और भयंकर स्वरूप लेती है ।

२३-३-'४५

भूलने सुधारी लक्ष्ये अटले भूल मटी लय छे. पणु भूल दणावी दध्ये छीये त्यारे ते गूमडानी पेठे कूटे छे अने लयंकर स्वरूप ले छे.

२३-३-'४५

आत्माको पहचाननेसे, उसका ध्यान धरनेसे और उसके गुणोंका अनुसरण करनेसे मनुष्य ऊँचे जाता है । उलटा करनेसे नीचे जाता है ।

२४-३-'४५

आत्माने अणभवाथी, तेनुं ध्यान धरवाथी अने तेना गुणाने अनुसरवाथी माणुस अये यडे छे. अथी अलटुं करवाथी नीये पडे छे.

२४-३-'४५

धैर्य किसे कहें ? शंकराचार्य कहते हैं : एक सुली — घासकी — लो, समुद्र किनारे बैठा और सुली पर पानीका बूंद लो । अगर धैर्य होगा और नज़दीकमें ऐसी खाई है जिसमें बूंद सुरक्षित रह सकता है, तो कालवशात् समुद्र खाली होगा । यह करीब २ पूर्ण धैर्यका दृष्टांत है ।

२५-३-'४५

धैर्य केने कडेवाय ? शंकराचार्य कडे छे : घासनी अेक सुणी लधने समुद्रकिनारे जेसो ने सुणी पर पाणीनुं अेक अेक टीपुं दो. धैर्य हुशे अने नलकमां टीपां सत्यवाध रहे अेवी भाध हुशे तो काणे करीने समुद्र भादी थशे. आ लगलग पूर्ण धैर्यनुं दृष्टांत छे.

२५-३-'४५

जिसको इतना धैर्य नहीं है, वह अहिंसा-पालन  
नहीं कर सकता है ।

२६-३-'४५

जेनामां आटकुं धैर्यं नथी ते अहिंसा  
न पाणी शके.

२६-३-'४५

साँप और मनुष्यमें क्या फ़रक ? देखनेमें साँप  
पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरों पर टटार  
रहकर चलता है । लेकिन यह देखाव है । जो  
मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है, उसका क्या ?

२७-३-'४५

साप अने माणुसमां शे। ईर ? साप पेटे  
यादे छे, माणुस पग पर टटार रहीने  
यादे छे. पणु आ देभाव छे. जे  
माणुस मनथी पेटे यादे छे तेनुं शुं ?

२७-३-'४५

प्रतिदिन मौनका महत्त्व मैं देखता हूँ । सबके लिए अच्छा है, लेकिन जो कामोंमें डूबा रहता है उसके लिए तो मौन सुवर्ण है ।

२८-३-'४५

मौननुं महत्त्व हुं दररोज जेठिं छुं.  
 मौन सोने माटे सारुं छे. पण जे  
 काममां डूजेले। रडे छे तेने माटे तो  
 मौन सोना जेवुं छे.

२८-३-'४५

“उतावला सो बहावरा, धीरा सो गंभीरा ।”  
 प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है ।

२९-३-'४५

“उतावणा सो आवरा धीरा सो गंभीर.”  
 — जे उडेवतनुं सत्य क्षणे क्षणे जेवामां  
 आवे छे.

२९-३-'४५

नियमका छूट जाना कैसा खतरनाक है !

मुंबई आया और रोज़ लिखना छूटा ।

लिखा : ३-४-'४५

३०-३-'४५

नियम तूटे अे केवुं लोणमकारक छे !

मुंभई आये। ने रोज़ लणवानुं छूटी गयुं.

लणयुं : ३-४-'४५

३०-३-'४५

बगैर नियमके एक भी काम नहीं बनता ।

नियम एक क्षणके लिए टूट जाय, तो सूर्यमंडल

सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा ।

लिखा : ३-४-'४५

३१-३-'४५

नियम वगर अेक पणु काम न यादे.

अेक क्षणने माटे पणु नियम तूटे तो.

आणुं सूर्यमंडल अस्तव्यस्त थई लय.

लणयुं : ३-४-'४५

३१-३-'४५

यह बात छोटे मोटे सबके लिए है ऐसा सोचकर हम सीखें और चलें, या जिंदा होते हुए भी मरें ।

लिखा : ३-४-'४५

१-४-'४५

आ वस्तु नाना मोटा सौने भाटे छे  
अम विचारीने आपणु शीभीअे ने ते  
प्रमाणु यादीअे, नहीं तो जवता छतां  
भूअेदा छीअे.

लभ्युं : ३-४-'४५

१-४-'४५

बगैर जरूरतके हाजत बढ़ाना पाप-सा लगता है ।

लिखा : ३-४-'४५

२-४-'४५

वगर जरूरे हुआतो वधारवी अे पाप  
जेवुं लागे छे.

लभ्युं : ३-४-'४५

२-४-'४५

आजका दिन फाँसीवालोंको बचानेके लिए हड़तालका है । अगर लोग मात्र समझ-बूझ कर आजका कार्य करें, तो अहिंसाके मार्गमें हमने बड़ा काम किया होगा ।

३-४-'४५

આજનો દિવસ ફાંસીની સજાવાળાઓને બચાવવા માટે રાષ્ટ્રીય હડતાલનો છે. જો લોકો જોઈ વિચારીને જ આજનું કાર્ય કરશે, તો અહિંસાના માર્ગમાં આપણે ઘણું કામ કર્યું ગણાશે.

૩-૪-'૪૫

मनुष्य जानता है क्या करना, लेकिन जानता है वह करता नहीं । उसका क्या कारण ?

४-४-'४५

શું કરવું તે માણસ જાણે છે, પણ જાણે છે તે કરતો નથી. તેનું શું કારણ ?

૪-૪-'૪૫



अगर हम बाहरके मानसिक वायुमंडलके असर नीचे आवें, तो हमारा नाश ही है। चीमूरवाले क़ैदियोंके बारेमें प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है। हम कर्तव्य-पालन करें और अनासक्त रहें।

५-४-'४५

आपणु पर अडारना मानसिक वातावरणुनी असर थर्ध तो आपणु नाश ज छे. चीमूरवाणा डेदीअेनी आअतमां वातावरणु रेज अडलातुं रडे छे. आपणु कर्तव्यपालन करीअे अने अनासक्त रहीअे.

५-४-'४५

सीधो बातको भी मनुष्य टेड़ी समझे, उसे सहन करनेमें कितनी भारी अहिंसा चाहिये !

६-४-'४५

सीधी वातने पणु जे भाणुस आडी समजे, तेने सहन करवामां डेटली लारे अडिसा जेध अे !

६-४-'४५

शरीरको बचानेके लिए बहुत उद्यम करता हूँ । आत्माको पहचाननेके लिए इतना करता हूँ क्या ?

७-४-'४५

शरीरने अन्यायवा भाटे धण्डो। उद्यम करुं छुं।  
आत्माने ओणअवा ओटले। करुं छुं अरे ?

७-४-'४५

गैर-समझूतीसे मैं गुस्सा करता हूँ, रोता हूँ, हँसता हूँ, रहम खाता हूँ । यह सब छोड़ कर, धीरज रख कर, गैर-समझूती मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं है क्या ?

८-४-'४५

गैरसमझूतीथी हुं गुस्से थाईं छुं,  
रोईं छुं, हसुं छुं, दया भाईं छुं।  
आ अंधुं छोडी, धीरज राभीने गैर-  
समझूती हूर करवी ओ न ओक भारे।  
धर्म नथी ?

८-४-'४५

हम क्या मानें ? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा ?  
दोनों ग़लत हो सकते हैं । तब हमारा इनसाफ़  
हम ही करें ? इसमें भी तो काफ़ी ग़लती  
पाई जाती है । हम कैसे हैं सो तो ईश्वर  
ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं  
है । अच्छा तो यह है कि हम अपने बारेमें  
कुछ जानें नहीं, मानें नहीं । जैसे हैं वैसे हैं ।  
जाननेसे और माननेसे हमें कुछ फ़ायदा नहीं  
पहुँचता । हमारा धर्म-पालन ही सच्ची बात है ।

९-४-'४५

આપણે શું માનવું? આપણી પ્રશંસા  
કે આપણી નિંદા? બંને ખોટી હોઈ  
શકે. ત્યારે આપણે ઇન્સાફ આપણે જ  
કરીએ? એમાં પણ ઘણી ભૂલો ભેવામાં  
આવે છે. આપણે કેવા છીએ એ તો  
એક ઇશ્વર જ જાણે છે, પણ તે તો  
આપણને કહેતો નથી. એટલે સારું તો  
એ છે કે આપણે આપણે વિષે કંઈ  
જાણીએ નહીં, માનીએ નહીં. જેવા

છીએ તેવા છીએ. જાણવાથી ને માનવાથી  
આપણને કશેા લાભ નથી થતો. ખરી  
મુદાની વાત આપણું ધર્મપાલન છે.

૯-૪-'૪૫

અંધા વહ નહીં જિસકી આંખ ફૂટ ગઈ હૈ ।  
અંધા વહ હૈ જો અપને દોષ ઢાંકતા હૈ ।

૧૦-૪-'૪૫

જેની આંખો કૂટી ગઈ છે તે આંધળો  
નથી પણ જે પોતાના દોષ ઢાંકે છે તે  
આંધળો છે.

૧૦-૪-'૪૫

મનુષ્યકી શાંતિકી કસૌટી સમાજમેં હી હો સક્તી  
હૈ, હિમાલયકી ટોચ પર નહીં ।

૧૧-૪-'૪૫

માણસની શાંતિની કસૌટી સમાજમાં જ  
થાય, હિમાલયની ટોચ પર નહીં.

૧૧-૪-'૪૫

आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन बिलकुल  
दूसरी वस्तु है ।

लिखा : १५-४-'४५

१२-४-'४५

आदर्श एक वस्तु छे, तेनुं पालन  
ये जुदी न वस्तु छे.

दार्थ्युं : १५-४-'४५

१२-४-'४५

सिवाय आदर्शके मनुष्य सुकान रहित जहाजके  
जैसा है ।

लिखा : १५-४-'४५

१३-४-'४५

आदर्श वगरने। माणस सुकान वगरना  
वहुण नेवे। छे.

दार्थ्युं : १५-४-'४५

१३-४-'४५

मेरे पास आदर्श है, ऐसा तब ही कहा जाय  
जब मैं उसे पहुँचनेकी कोशिश करता हूँ ।

लिखा : १५-४-'४५

१४-४-'४५

मारे अमुक आदर्श छे अेम हुं तो  
ज कड़ी शकुं जे हुं अे आदर्शने  
पहोयवाने प्रयत्न करतो डोडं.

कथ्युं : १५-४-'४५

१४-४-'४५

हम कोशिशसे संतुष्ट रहें, बशर्ते कि कोशिश  
सही और यथाशक्ति हो । परिणाम सिर्फ  
कोशिश पर निर्भर नहीं रहता । और चीजें  
होती हैं जिन पर हमारा कोई अंकुश नहीं होता ।

१५-४-'४५

साथे अने यथाशक्ति प्रयत्न थतो डोय  
तो प्रयत्नथी आपणे संतोष मानीये.  
परिणाम केवण प्रयत्न पर आधार नथी  
राभतुं; भीण पणु केटलीक वस्तुये।  
डोय छे जेमना पर आपणे। अंकुश  
नथी डोतो.

१५-४-'४५

सही कोशिश किसे कहें? एक बात यह है कि सही कोशिशसे बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता है। इसलिए फलसे ही कहा जाता है कोशिश सही थी। लेकिन अनुभवसे मालूम होता है ऐसे हमेशा नहीं बनता। सही कोशिश यह है कि साधनकी योग्यताके बारेमें निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है।

१६-४-'४५

साथे प्रयत्न केने कडेवाय? अेक वात अे छे के साथे प्रयत्नथी धाणी वार आपणुने इच्छित इण भणे छे. अेटले इण परथी न कडेवामां आवे छे के प्रयत्न साथे हुतो. पण अनुभवथी न्णाय छे के हुंमेशां अेम नथी अनतुं. साधननी योग्यता विषे निश्चय होय, विपरीत इण लेधने पण साधन अदलाय नहुीं, तथा प्रयत्न अदलाय नहुीं के अोछे थाय नहुीं त्तारे ते साथे प्रयत्न कडेवाय.

१६-४-'४५

यथाशक्ति किसे कहें ? जिससे मनुष्य अपनी  
सब शक्ति बगैर संकोचके खर्च करता है ।  
ऐसे शुभ प्रयत्नमें सफलता प्रायः होती है ।

१७-४-'४५

यथाशक्ति केने कडेवाय ? पोतानी अधी  
शक्ति नराये संकेत्य वगर वापरवी ते. येवा  
शुभ प्रयत्नमां धरुं करीने सङ्गता भणे छे.

१७-४-'४५



मनुष्य अपने निर्णय नहिं वत् प्रमाणको आधार-  
 भूत करके करता है और उसी पर चलता  
 है । ऐसी हालतमें अच्छा है कि जहाँ तक  
 बन सके कुछ निर्णय करना नहीं और परिणामके  
 बारेमें तटस्थ रहना । निर्णय करनेका धर्म  
 बन जाता है, तब पूरी सावधानी रखकर ही  
 निर्णय करना और निडरतासे अमल करना ।

१८-४-४५

भाणुस पोताना निर्णये नर्ही जेवा  
 प्रमाणने आधारे करे छे अने ते प्रमाणे  
 यावे छे. जेवी स्थितिमां अनता सुधी  
 कुंठ निर्णय न करवे। अने परिणामनी  
 आगतमां तटस्थ रहेवुं जे साहुं. निर्णय  
 करवाने। धर्म थर् पडे तो पूरेपूरी  
 सावधानी राभीने ज निर्णय करवे।  
 अने तेनो नीडरताथी अमल करवे।

१८-४-४५

असंगत ऐसी मोटी वस्तु छोटी लगती है, और  
सुसंगत जैसी सबसे छोटी वस्तुका इतना ही  
स्थान है जैसा मोटीका ।

१९-४-'४५

असंगत अेवी मोटी वस्तु नानी लागे  
छे अने नानाभां नानी सुसंगत वस्तुनुं  
स्थान मोटी वस्तु जेटकुं न छे.

१९-४-'४५



# परिशिष्ट



## परिशिष्ट-१

वृक्षनसे मत ले, मन तू वृक्षनसे मत ले ।

काटे वाको क्रोध न करहीं,

सिंचत न करहिं नेह ॥ वृक्षन० ॥

धूप सहत अपने सिर ऊपर,

औरको छाँह करेत ।

जो वाहीको पथर चलावे,

ताहीको फल देत ॥ वृक्षन० ॥

धन्य धन्य ये पर-उपकारी,

वृथा मनुजकी देह ।

सूरदास प्रभु कहँ लगि बरनों,

हरिजनकी मत ले ॥ वृक्षन० ॥

## परिशिष्ट-२

अब हौं कासों बैर करौं ?

कहत पुकारत प्रभु निज मुखते ।

“ घट घट हौं बिहरौं ” ॥ ध्रुव ॥

आपु समान सबै जग लेखौं ।

भक्तन अधिक डरौं ॥

श्रीहरिदास कृपाते हरिकी ।

नित निर्भय विचरौं ॥ १ ॥

7405

परिशिष्ट-३

ना मंदिरमें, ना मसजिदमें,  
ना गिरजेके आसपासमें,  
ना पर्वत पर, ना नदियोंमें,  
ना घर बैठे, ना प्रवासमें,  
ना कुंजोंमें, ना उपवनके  
‘ शांतिभवन ’ या ‘ सुखनिवास ’ में,  
ना गानेमें, ना बानेमें,  
ना आंसूमें, नहीं हासमें,  
ना छन्दोंमें, ना प्रबन्धमें,  
अलंकार या अनुप्रासमें,  
खोज ले कोई, राम मिलेंगे,  
दीनजनोंकी भूख प्यासमें ।

रामनरेश त्रिपाठी



# 7505 अन्य उपयोगी पुस्तके

आपणु सौ ऐक पितानां संतान	3.00
ग्राम स्वराज	2.00
भारा स्वप्ननुं भारत	2.50
सत्य ऐ ङ धृश्वर छे	1.50
गांधीविचारदोहन	2.00
मधुकर	2.00
त्रिवेणी संगम	1.50
आ अने आपु	1.50
आपु-भारी मा	0.50
आपुनी प्रसादी	2.00
अभारां आ	1.50
गांधीजुनी तेजरेआ	1.00
गांधी आपु	1.75
आपुना आश्रममां	2.00
आपुनी छायामां	2.50
आपुनी सेवामां	2.00
आपुने पगले पगले	2.00
आपु-भारी नजरे	2.00
शांतिनेा मार्ग	2.00
महात्माजुनी छायामां	3.00



